शोध - ऋतु Shodh-Rityu

तिमाही शोध-पत्रिका
PEER Reviewed JOURNAL

ISSUE-14 VOL-2 IMPACT-GIF-1.7216, SJI-5.618 ISSN-2454-6283 अक्तूबर-दिसंबर,2018

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक
डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड
९४०५३८४६७२

तकनीकि सम्पादक
अनिल जाधव,
मुंबई

पत्राचार हेतु पता->
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,हनुमान गढ़ कमान के सामने,नांदेड-४३१६०५

अनु क्र म णि का

1 समकालीन संस्कृति, संचार ते साहित्य–कुनाल शर्मा–05

2 हिन्दी पत्रकारिता एवं संचार साधन का विकास–डॉ. कुमार नित्य गोपाल–06

3 संरक्षित भू–कृषि के संदर्भ में कृषिकों का दृष्टिकोण:एक क्षेत्रीय सौगोलिक अवलोकन–नेयाज़ अहमद–07

4 भारत छोड़ो आंदोलन में आजाद–दस्ता की भूमिका: एक अवलोकन–गुलाम सरवर–10

5 तुलसी के जीवन पर आधारित उपन्यासों का शिल्प वैशिष्ट्य–सुषमा कुमारी–12

6 तुलसीदास के काव्यों में वैज्ञानिक पर्यावरण–सिता सिन्हा–15

7 तंत्रवाद का सामाजिक–आर्थिक आयाम : एक अध्ययन–पल्लवी–16

8 **Online consumption pattern in India-Asif Kaskar-19**

9 जयनंदन की रचनाओं में नारी नेतृत्व–डॉ.गोपाल प्रसाद–24

10 षोडश संस्कारों सहित विवाह संस्कार की मौलिकता–डॉ अरुण कुमार मिश्र–28

11 भारत में खाद्य सुरक्षा की अवधारणा : एक मूल्यांकन–डॉ.योगेन्द्र सिंह–31

12 यशपाल के उपन्यासों में मार्क्सवादी चिन्तन–प्रा.डॉ.संग्राम सोपान गायकवाड–33

13 'व्यथावेदनांचा जळजळीत अंगार':–'मारेकरी जेव्हा मातीला येतात'–डॉ.सुशीलप्रकाश चिमोरे–35

14 **Enhancing Sports Performance Through Hypnosis–Dr.Rajeshwar V. Patil-38**

15 सूरज का सातवाँ घोड़ा : साहित्य और सिनेमा–सुषमा नरांजे–40

16 महात्मा ज्योतिराव फुले यांचे कृषि विषयक विचार–डॉ.एच.एम.शेठ–44

17 .हिन्दी कहानियों में तड़पता बचपन–डॉ.राजश्री भामरे–46

18 समकालीन कविता और विस्थापन (कश्मीर के विशेष सन्दर्भ में)–डॉ.प्रणीता.पी–51

19 जातीय मानसिकता एवं उत्पीड़न और सामाजिक चेतना की कहानी–'खरोंच'–ए.सान्थशिय राय–53

19.जातीय मानसिकता एवं उत्पीड़न और सामजिक चेतना की कहानी–'खरोंच'

–ए.साम्बशिव राव,
एसिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
यस.आर–जी.जी.यन.आर आर्ट्स–साइंस कॉलेज(A)उम्मम, तेलंगाना

जातीय मानसिकता एवं उत्पीड़न : बाबासाहेब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर अपने शोध प्रपत्र /आलेख **Castes in India** और **Annihilation of Cast** में बताते हैं कि भारत एक जाति प्रधान देश है। भारतीय मार्क्सवादीयों का मानना हैं कि 'वर्ग समाज' भारत में जाति उन्मूलन की सहायता करता है। लेकिन अम्बेडकरवादी डॉ. जयप्रकाश कर्दम अपनी कहानी 'खरोंच' के माध्यम से यह स्पष्ट करने की कोशिश करते हैं कि दलित अफसरों की आर्थिक समृद्धि, स्तर एवं पदोन्नति यहाँ 'वर्ग' न बनकर भारतीय जाति व्यवस्था की विस्तृत सीमा को और व्यापक बनाती है। इस कहानी के प्रमुख पात्र 'रंगलाल' अपने सरकारी दफ्तर में कितना भी बड़ा (क्लास – वन) अफसर क्यों न हो लेकिन अपने ही कर्मचारियों की जातिगत भेदभावों से बहुत बुरी तरह पीड़ित रहते हैं। परंपरा की मानसिकता के कारण संप्रदायिकता के नाम पर जीने के ढंग की बुरीतरह आलोचना करके बेइज्जत के साथ बड़ा अपमानित करते हैं। इन गैर दलित कर्मचारियों की आलोचना का केंद्र बिंदु प्रत्यक्ष रूप से 'वैयक्तिक कार' तो है, लेकिन परोक्ष रूप से यह 'जाति' है। फिर भी इस कहानी में जातिगत भेदभाव प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है। व्यक्तिगत जीवन में 'कार' नहीं होना यह बहुत साधारण सी बात है। लेकिन दलित अफसर की उत्पीडन करने केलिए 'कार' एक साधन बनजाती है।

इस कहानी में 'रंगलाल' बाबासाहेब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की दीक्षा में शिक्षित एक दलित और क्लास–वन अफसर हैं। अपने दफ्तर में जाति के नाम पर उनके परोक्ष में उत्पीडन पहुँचानेवाले कर्मचारी हैं। जाति व्यवस्था के बारे में, उच्च–नीच के बारे में ये चर्चा करते हैं। इसलिए कि साधारणतः ये लोग जाति व्यवस्था में विश्वास रखते हैं। रंगलाल के बारे में, उनके रहन–सहन के बारे, जीने के ढंग के बारे में, उनकी जाति के बारे में जहां तक कि आरक्षण के बारे में भी अवहेलना करते हैं। कई बार हीनताबोध कराते हैं। सादगी जीवन पिछड़ापन का संकेत मानते हैं। इसलिए बस स्टैंड से दफ्तर तक पैदल चलकर आनेवाले रंगलाल को देखकर 'चार गैर दलित' कर्मचारी इस प्रकार चर्चा करते हैं– 'एक कर्मचारी कह रहा था, कंजूस है साला। दूसरे ने कहा अफसर बन गया है तो क्या हुआ ? है तो यो ही...। तीसरे ने कहा, तुम ठीक कहते हो। आरक्षण से नौकरी पाकर अफसर भले ही बन जाएँ, लेकिन स्तर तो यही रहेगा। चौथे ने अपनी टिप्पणी दी, सीधा सादा आदमी है बेचारा। सोचता होगा जब बस से काम चल रहा है तो क्या जरूरत है गाड़ी का झंजट पाने की। यह भी हो सकता है कि उसको ड्राइविंग नहीं आती हो। इस पर पहलेवाले ने टोका, और कहा यह सादगी नहीं पिछड़ापन है। बात ड्राइविंग की नहीं, जीने के ढंग की है। चाहे कुछ भी बन जाएँ, इन लोगों को जीने का ढंग नहीं आएगा।'1 जातीय व्यवस्था, धर्मान्धता, जातिगत भेदभावों के उच्च–नीच स्वभाव से ग्रसित मानसिकता के गैर दलितों का यह एक पक्ष है। इनका दूसरा पक्ष जब रंगलाल एक बड़ी नई कार 'होंडा' को ड्राइविंग करते हुए दफ्तर पहुंचाते हैं तब सम्पूर्णतः हमारे सामने साक्षात्कार होता है। सरकारी दफ्तर में रंगलाल का उच्च पद और आर्थिक समृद्धि ने उसे किसी प्रकार का सम्मान और गौरवान्वित नहीं की, भारतीय सामाजिक व्यवस्था इनकी गिनती उच्च वर्ग / स्तर में न होकर जातीय व्यवस्था के नीच यही दलित और अनुसूचित जाति में ही होता है। यह इसलिए हो रहा है कि अपना भारतीय समाज वर्ग प्रधान न होकर जाती प्रधान है। इस कहानी के माध्यम से यही स्पष्ट करना चाहते हैं कि – 'आरक्षण से नौकरी पाकर अफसर भले ही बन जाएँ, लेकिन स्तर तो यही रहेगा।'

यह दृश्य अन्य गैर दलित कर्मचारियों में कौतूहल पैदा करता है। कुछ लोग जिज्ञासा भरी दृष्टी से देखे थे, कुछ लोग ईर्ष्या की दृष्टी से। कुछ लोग ईर्ष्यालू इसलिए हैं कि – 'रंगलाल के पास कार क्यों आ गयी? अगर कार आ भी गयी तो यह बड़ी कार क्यों आ गयी? कोई दूसरी–छोटी कार क्यों नहीं आयी?'2 दफ्तर के गलियारों में जो कर्मचारी खड़े हुए थे उन सब की नज़र रंगलाल को पीछे कर रही हैं। सब के सब रंगलाल की ओर संकेत कर आपस में कानाफूसी कर रहे थे। सवर्ण कर्मचारियों की मानसिकता एवं व्यवहार से रंगलाल को हैरानी हुई। यह एक प्रकार का उत्पीडन है। डॉ. कर्दम इस कुंटित मानसिकता का वर्णन इस प्रकार हैं कि–'कल तक जब उसके पास कार नहीं थी और वह बस से उतारकर पैदल दफ्तर आता तो दफ्तर के ये ही लोग उसे ऐसे देखते थे जैसे वह कोई विचित्र जीव हो। आज वह नयी कार से दफ्तर आया

तो आज भी ये लोग उसे ऐसे देख रहे थे जैसे वह किसी दूसरी दुनिया का प्राणी हो।"3

मिठाई खाने के बाद कर्मचारी मुबारकबाद तो दिये थे, लेकिन उसमें आत्मीयता नहीं है। आत्मीयता में अपनापन इसलिए नहीं है कि उन कर्मचारियों का मन सवर्ण मानसिकता, उत्पीडन शक्ति एवं दमनीति से ओत–प्रोत है। वही ईर्ष्या, द्वेषभाव, अपहास्य और कुसंस्कार का परिणाम था– पार्किंग में खड़ी कार में खरोंच खींचना। जब उनके पी.ए के कहने के बाद रंगलाल कार के पास जाकर ध्यान से देखने से यह पता चलता है कि "खरोंच के निशान किसी वाहन से टकराने के नहीं, ब्लेड या किसी अन्य धारदार चीज से खींचे गये निशान थे। उसे समझने में देर नहीं लगी कि हो न हो यह जरूर दफ्तर के ही किसी ईर्ष्यालु और कुस्सित मानसिकता के व्यक्ति का काम है।"4 नयी गाड़ी में पहले ही दिन खरोंच के निशान देखकर रंगलाल सन्न रह गया। रंगलाल की कार में पहले ही दिन खरोंच लग जाना पूरे दफ्तर में चर्चा का विषय बन गया। कुछ लोगों ने रंगलाल के प्रति हमदर्दी जतायी तो कुछ ने अलग तरह से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। किसी ने कहा, "बड़ा बुरा हुआ बेचारे के साथ। नयी गाड़ी खरीदी और पहले ही दिन खरोंच लग गयी।" दूसरी व्यक्ति की टिप्पणी थी, ड्राइविंग नहीं आती होगी ठीक से। तीसरे ने व्यंग्यात्मक टिप्पणी की, तुम ठीक कहते हो। कार खरीद लेना ही सब कुछ नहीं होता। कार चलाने का संस्कार भी आना चाहिए। कहां से आएगा इन लोगों में यह संस्कार।"5

इस कहानी में दलित क्लास–वन अफसर रंगलाल का एक तरफ सादगी जीवन और दूसरी तरफ आर्थिक समृद्धि को लेकर जाति प्रथा से ग्रसित इन चार गैर दलित कर्मचारियों की चर्चा पर यदी पर चर्चा या व्याख्या करेंगे तो 'दलित सामाजिक चेतना' इस का परोक्ष यथार्थ चित्रण को लेकर इन निष्कर्शों पर पहुँचाना सहज और स्वाभाविक होगा – 1. चार गैर दलित कर्मचारी ये ही हैं जो जातीय व्यवस्था से भारत में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में अपने आधिकार चला रहे हैं। ये ही I. ब्राह्मण, II. क्षत्रिय, III. वैश्य, और IV. शूद्र (प्रमुख बहुजन चिन्तक प्रो. कंचा ऐलैय्या इन शूद्रों को नये क्षत्रिय मानते हैं, जब कि दलितों को अति शूद्र एवं अस्पृश्य मानते हैं) 2. क्या ये रुढ़िग्रस्त मानसिकता के लोग दलितों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक स्थिति में परिवर्तन एवं बदलाव और विकास एवं समृद्धि देखना चाहते हैं? 3. क्या ये लोग संवैधानिक आरक्षण का स्वागत करते हैं? 4. क्या ये लोग समता, समानता और बंधुता का आह्वान करना चाहते हैं? 5. क्या इन लोगों को इस देश की लोकतंत्र व्यवस्था में विश्वास हैं? 6. क्या सीधा सादा जीवन और सादगी जीवन शैली को पिछड़ापन कहा जय? 7. यदी कार ड्राइविंग / चलाना संस्कार मानते हैं तो इन ड्राइवरों (ज्यादातर अल्पसंख्यक मुसलमान, दलित और आदिवासी) के प्रति इनकी हिंसा नीति या दुरव्यवहार को क्या कहना चाहिए? 8. क्या ये लोग दलितों के साथ बराबरी जीवन या समतामूलक एवं सम्मानजनक व्यवहार से रहना मनसा, वाचा, कर्मणः चाहते हैं? 9. क्या ये चार लोग एक जुट होकर दलितों के हक एवं मानवाधिकारों को हड़प नहीं ले रहे हैं?, इन प्रश्नों का अब तक सकारात्मक उत्तर पाना संभव नहीं हुआ। इसलिए दलित विचारक सवर्णों की परंपरागत मानसिक कुटिल स्थानाय से सही परिचित हैं।

उपर्युक्त विचारों की पुष्टी करते हुए इनमें से ही कई लोगों ने रंगलाल को बीमा कंपनी के जरिए कार के खरोंच वाले पूरे हिस्से को बदलवाने का सुझाव दिय। उनके सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार को देखकर कोई नहीं कह सकता था कि ये वे ही लोग थे, जो दलित होने के कारण रंगलाल को हिकारत की नज़र से देखते थे, उसके प्रति द्वेषभाव रखते थे, और इनमें से ही किसी एक व्यक्ति ने कार में खरोंच के जरिए अपने मन के जातीय द्वेष और घृणा का जहर उगला था। इसलिए वह उदास नजरों से कार में लगी खरोंच को देखता रह गये। उसने कार में लगी खरोंच का दर्द अपने कलेजे में अनुभव किया। दफ्तर के कर्मचारियों में से कुछ सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देखते हुए और कुछ कुटिल दृष्टि उस पर फेंकते हुए उसके पास से गुजर रहे थे और वह खरोंच के दर्द को सहला रहा था।

इन चार गैर दलितों की जातीय मानसिकता, उत्पीडन शक्ति एवं दमनीति के कारण रंगलाल का उमंग एवं उत्साह गायब होकर उसका मन आहत, क्लांत एवं उदास बन जाता है। "उसका मन गाड़ी चलाने से ज्यादा उसमें लगी खरोंच पर केन्द्रित था। उसने महसूस किया कि खरोंच कार से ज्यादा उसके कलेजे पर लगी थी और उसके कलेजे पर लगी खरोंच कार में लगी खरोंच से ज्यादा बड़ी और गहरी थी।"6 इस कहानी में पढ़े लिखे दलित कर्मचारी के प्रति जाति व्यवस्था की मानसिकता, उत्पीडन शक्ति एवं दमनीति बौद्धिक या बौतिक न होकर मानसिक शोषण का केंद्र बनती है। और एक नया

मोड़ यह भी है कि शारीरक क्षति पहुंचाने के बदले दलितों की बौतिक चीज जैसे कार को क्षति पहुंचाना। रंगलाल आक्रामक जरूज थे, प्रतिकार भी, शोषण के विरुद्ध भी थे, इसलिए दूसरों के सामने लेट–डाउन होकर जीना उनकी चेतना को स्वीकार्य नहीं था। लेकिन संघटित होकर संघर्ष करने में गैर दलितों का पलायनवाद बहुत दूर तक भाग खड़ा है।

सामाजिक चेतना: –इस कहानी में ध्यान देने कि और एक महत्वपूर्ण बात यह है कि रंगलाल के परिवार में उनकी पत्नी, बेटी और बेटा में भी सामजिक चेतना अधिक भरी हुई। परिवार में रंगलाल अपनी पत्नी, बेटी और बेटा के साथ हमेशा स्नेहपूर्वक ढंग से और वात्सल्यपूर्वक रहते हैं। वह अपने परिवार में संवैधानिक और लोकतंत्र का माहौल लाना चाहते हैं। इसलिए कि वे बाबासाहेब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के विचारों से प्रभावित हैं। संविधान के प्रति श्रद्धा और विश्वास हैं। समता, समाता और बंधुता का सूत्रपात घर से आरम्भ करते हैं। परिवार केलिए कार खरीदने का निर्णय आपस में चर्चा करने के बाद ही तय करते हैं। वह अपने बच्चों केलिए एक 'रोल मॉडल पापा' हैं। इनके पारिवारिक संबंधेम में आत्मीयता और अपनापन ही सफलता का सूत्र हैं। रंगलाल के जीवन में बच्चे ही सब से बड़ी प्राथमिकता हैं। उनको शिक्षित बनाना सर्वोपरि विचार रहता हैं। रंगलाल के साथ–साथ पत्नी और बच्चों में भी शिक्षा के प्रति श्राद्ध और अत्यंत आस्था दिखाई देती है। कार के बारे में चर्चित करते समय अपने बचों को दिखावट के बदले मेहनत के साथ आगे बढ़ने का सुझाव देते हैं। अपनी बेटी से कहते हैं कि 'तुम दिखावे पर क्यों जाते हो? मेहनत से पढ़ो, अच्छी नौकरियों पर जाओ। तुम्हारा स्टेटस अपने आप बन जाएगा।'7 रंगलाल की पत्नी का विचार है कि– कार से आराम मिलेगा। दूर जगह पर जाने केलिए तकलीफ उठाने की कोई जरूरत नहीं। बहुत समय बच जाता है। परेशानी नहीं होती है। कॉलोनी की अन्य औरतों की तरह वह भी अपने पती के साथ कार में बैठकर बाजार जा सकती है। इसलिए वह इस प्रकार कहती हैं कि 'देखो जी, कॉलोनी में हर किसी के पास कार है। आप भी कार क्यों नहीं खरीद लेते?...कार आ जाएगी तो कितना आराम हो जाएगा।'8 पत्नी की सामाजिक चेतना का यह एक उदाहरण है।

रंगलाल के बेटी 'रानी' और बेटा 'राकेश' में भी सामाजिक चेतना दिखाई गयी। ये बच्चे समकालीन सामाजिक व्यवस्था से परिचित हैं। इसलिए यदी अपने पास आर्थिक समृद्धि है तो, समाज में समान अधिकार पाने केलिए सब के साथ, सब के जैसे (गैर दलितों की तरह) रहना चाहते हैं। इन केलिए कार आजकल 'स्टेटस सिम्बल' है। सम्मान जनक जिंदगी जीना चाहते हैं। इन बच्चों में स्वाभिमान की चेतना और सामाजिक चेतना अधिक हैं। बच्चे कहते हैं कि –'जब मै कॉलेज में अपने फ्रेंड्स लोगों को बताती हूं कि मेरे पापा क्लास–वन अफसर हैं तो सब इम्प्रेस हो जाते हैं। लेकिन उनको पता चलता है कि हमारे घर में कार नहीं है तो सारा इंप्रेसन खत्म हो जाता है। इतना ही नहीं, उसको लगता है कि मैं झूठ बोलती हूं।'9 माता–पिता का परिचय ऊँची हो तो बच्चे बहुत खुशी रहते हैं। बेटी केलिए कार इंप्रेस की चीज हैं। अपनी बात को और आगे बढ़ाते हुए बेटी कहती है कि ' बात केवल जरूरत की नहीं है पापा। कार स्टेटस सिंबल भी हैं। चले या न चले, लोगों को घर के सामने कार खड़ी दिखाई देनी चाहिए। घर में कार आ जाएगी तो कॉलोनी के लोगों में भी हमारा प्रभाव बढ़ेगा और बाहर भी हम शान से कह सकेंगे कि हमारे घर में भी कार है।'10 कार यहाँ बच्चों की नज़र में स्टेटस सिंबल भी और आर्थिक समृद्धि का संकेत भी है। लेकिन रंगलाल दूसरों पर अपनी आर्थिक समृद्धि का रोब दिखाना नहीं चाहते हैं। फिर भी बच्चे अपने प्रतिवाद करते हैं कि– 'हम दूसरों पर अपनी आर्थिक समृद्धि का रोब दिखने केलिए नहीं कह रहे हैं। हम तो इसलिए कह रहे हैं ताकि हम दूसरों के सामने इस बात को लेकर लेट–डाउन न हो, शर्मिंदा न हो कि हमारे पास कार नहीं है। दूसरे लोग हमारे बारे में यह न सोचें कि हम को जीना नहीं आता।'11 बेटे राकेश ने भी रानी का समर्थन किया, 'दीदी ठीक कहती हैं पापा। जब सब लोग अपनी कारों में जाते हैं और हम पैदल बस स्टैंड की ओर जाते हैं, या बस स्टैंड पर खड़े बस का इंतजार कर रहे होते हैं तो हमारे पास से गुजरने वाली ये कारे हम पर व्यंग करती हैं। हमारी मजाक उड़ाती हैं। हम उनके इस व्यंग से स्वयं को आहत और अपमानित सा महसूस करते हैं। आप चाहते हैं कि हम अच्छी सम्मानजनक जिंदगी जियें तो हमें दूसरों के सामने क्यों लेट–डाउन होने देते हैं आप? क्यों नहीं कार खरीद लेते आप भी।'12 अंत में चमचमाती होंडा कार उनके घर आ गयी।

रंगलाल के लिए अपने जीवन में बच्चे ही सब कुछ है। इसलिए 'उसके बच्चे किसी के समक्ष झुकें या किसी प्रकार के हीनताबोध के शिकार हो, यह उसकी चेतना को स्वीकार्य नहीं था'13 इस प्रकार 'खरोंच' कहानी जातीय मानसिकता एवं उत्पीड़न के केन्द्रीय होते हुए भी परिवार के सदस्यों में

सामाजिक (कॉलोनी एवं कॉलेज, बस स्टैंड) चेतना परिचय भी देती है।

सहायक ग्रन्थ सूची : –**अ.**Castes in India: Their Mechanism, Genesis and Development by B. R Ambedkar, Edited by Frances W. Pritchett. Text source: Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speaches, Vol. 1. Bombay: Education Department, Government of Maharashtra, 1979, pp.3-22. **आ.** बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, भाग-I जातिप्रथा, भारत में जातिप्रथा: संरचना, उत्पत्ति और विकास, इंडियन एन्टीक्वेरी (भारतीय पुरावशेष संकलन), मई 1917, खंड 41, **इ.**दलित अभिव्यक्ति संवाद और प्रतिवाद (डॉ. जयप्रकाश 'कर्दम'), सं. गौतम रूपचंद, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली – 110 053, प्रथम संस्करण : 2007, ISBN : 978-81-904244-9-3 **ई.**दलित चेतना – सोच, सं. गुप्ता रमणिका, नवलेखन प्रकाशन, मेन रोड, हजारीबाग–825 301, प्रथम संकरण : 1998 **उ.**मनुष्यता के आईने में दलित साहित का समाजशास्त्र, कुमार निरंजन, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्र.) लिमिटेड, दरियागंज, नई दिल्ली–110 002, प्रथम संस्करण : 2010, आई. एस. बी. एन. 978–81–7975–347–7 **ऊ.**दलित दृष्टी, ओमवेट गेल, अनुवादक: गुप्ता रमणिका एवं कैस अकील, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली – 110 002, प्रथम संकरण : 2011, ISBN:978-93-5000-726-6 **ऋ.**दलित राजनीति के मुद्दे, भास्कर हुकुम चन्द, स्वराज प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली–110 002, प्रथम संकरण : 2013, ISBN: 978-93-81582-44-2 **ऌ.**दलित साहित्य का स्त्रीवादी स्वर, थोरात विमल, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्र.) लिमिटेड, दरियागंज, नई दिल्ली–110 002, प्रथम संस्करण : 2008, आई. एस. बी. एन. 978–81–7975–230–2 **(1)** खरोंच (कहानी संग्रह), डॉ. कर्दम जयप्रकाश, स्वराज प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली– 110 002, प्रथम संस्करण : 2014, ISBN : 978-81-928054-3-6, पृ. सं. 23 **(2)** वही. पृ.सं. 27, (3) वही. पृ.सं. 28, (4) वही. पृ.सं. 28, (5) वही. पृ.सं. 29 **(6)** वही. पृ.सं. 29 **(7)** वही. पृ.सं. 27**(8)** वही. पृ.सं. 25 **(9)** वही. पृ.सं. 26**(10)** वही. पृ. सं. 26**(11)** वही. पृ.सं. 26 **(12)** वही. पृ.सं. 26 (13) वही. पृ.सं. 27